# दशरथकृत शनि स्तोत्र

**इन पाठों के बारे में**

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

## दशरथकृत शनि स्तोत्र

| | |
|---|---|
| प्रकार | स्तोत्र |
| देवता | शनि देव |
| संस्करण | मिलान किया गया पाठ |
| परम्परा | अनेक परम्पराओं में प्रचलित |
| स्रोत | बृहत्स्तोत्ररत्नाकर — निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1912 — No. 173, printed pp. 358–359 (djvu 362–363) |
| आभार | पाठ: बृहत्स्तोत्ररत्नाकर (निर्णयसागर प्रेस, 1912), संस्कृत विकिस्रोत (CC BY-SA 4.0), archive.org पर 1904 और 1916 के मुद्रणों से मिलान। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम। |
| कॉपीराइट | Text in the public domain. OCR transcription of the 1912 Nirnaya Sagar print from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0, rea |

श्रीगणेशाय नमः ॥

śrīgaṇeśāya namaḥ ||

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य । दशरथ ऋषिः । शनैश्चरो देवता । त्रिष्टुप्छंदः । शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

asya śrīśanaiścarastotrasya | daśaratha ṛṣiḥ | śanaiścaro devatā | triṣṭupchaṃdaḥ | śanaiścaraprītyarthaṃ jape viniyogaḥ |

कोणोऽतको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमंदसौरिः ।

koṇoṃ'tako raudrayamo'tha babhruḥ kṛṣṇaḥ śaniḥ piṃgalamaṃdasauriḥ |

नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ १ ॥

nityaṃ smṛto yo harate ca pīḍāṃ tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 1 ||

सुरासुराः किंपुरुषोरगेंद्रा गंधर्वविद्याधरपन्नगाश्च ।

surāsurāḥ kiṃpuruṣorageṃdrā gaṃdharvavidyādharapannagāśca |

पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ २ ॥

pīḍyaṃti sarve viṣamasthitena tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 2 ||

नरा नरेंद्राः पशवो मृगेंद्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः ।

narā nareṃdrāḥ paśavo mṛgeṃdrā vanyāśca ye kīṭapataṃgabhṛṃgāḥ |

पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ३ ॥

pīḍyaṃti sarve viṣamasthitena tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 3 ||

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि ।

deśāśca durgāṇi vanāni yatra senāniveśāḥ purapattanāni |

पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ४ ॥

pīḍyaṃti sarve viṣamasthitena tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 4 ||

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलांबरदानतो वा ।

tilairyavairmāṣaguḍānnadānairlohena nīlāṃbaradānato vā |



स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ५ ॥

prīṇāti maṃtrairnijavāsare ca tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 5 ||

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।

prayāgakūle yamunātaṭe ca sarasvatīpuṇyajale guhāyām |

यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ६ ॥

yo yogināṃ dhyānagato'pi sūkṣmastasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 6 ||

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात् ।

anyapradeśātsvagṛhaṃ praviṣṭastadīyavāre sa naraḥ sukhī syāt |

गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ७ ॥

gṛhādgato yo na punaḥ prayāti tasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 7 ||

स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी ।

sraṣṭā svayaṃbhūrbhuvanatrayasya trātā harīśo harate pinākī |

एकत्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥ ८ ॥

ekatridhā ṛgyajuḥsāmamūrtistasmai namaḥ śrīravinaṃdanāya || 8 ||

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबांधवैश्च ।

śanyaṣṭakaṃ yaḥ prayataḥ prabhāte nityaṃ suputraiḥ paśubāṃdhavaiśca |

पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदंते ॥ ९ ॥

paṭhettu saukhyaṃ bhuvi bhogayuktaḥ prāpnoti nirvāṇapadaṃ tadaṃte || 9 ||

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोंऽतको यमः ।

koṇasthaḥ piṃgalo babhruḥ kṛṣṇo raudroṃ'tako yamaḥ |

सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥ १० ॥

sauriḥ śanaiścaro maṃdaḥ pippalādena saṃstutaḥ || 10 ||

एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।

etāni daśa nāmāni prātarutthāya yaḥ paṭhet |

शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥ ११ ॥

śanaiścarakṛtā pīḍā na kadācidbhaviṣyati || 11 ||

इति श्रीशनैश्चरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

iti śrīśanaiścarastotraṃ saṃpūrṇam ||

## अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। विनियोग (ऋषि दशरथ, देवता शनैश्चर, छन्द त्रिष्टुप्) के बाद दशरथ सूर्यपुत्र को नमन करते हैं — कोण, अन्तक, रौद्र, यम, बभ्रु, कृष्ण, शनि, पिङ्गल, मन्द, सौरि — जो नित्य स्मरण से पीड़ा हर लेते हैं। देव-असुर, किन्नर-नाग, राजा-प्रजा, पशु-कीट, देश, दुर्ग, वन, सेना और नगर — विषम स्थिति में सब पीड़ित होते हैं। तिल, जौ, उड़द, गुड़, अन्न, लोहा और नीले वस्त्र के दान तथा अपने वार में मन्त्रों से वे प्रसन्न होते हैं; प्रयाग, यमुना-तट, सरस्वती के पुण्य जल और गुफाओं में वास करते हैं, ध्यानस्थ योगियों के लिए भी सूक्ष्म हैं; शनिवार को घर लौटने वाला सुखी रहता है। वे स्रष्टा, त्राता और संहारक तीनों हैं, ऋक्-यजुः-साम की मूर्ति हैं। जो प्रातः पुत्र-पशु-बान्धवों सहित यह अष्टक पढ़ता है वह सुख भोगकर अन्त में निर्वाण पाता है। पिप्पलाद द्वारा स्तुत दस नाम — कोणस्थ, पिङ्गल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यम, सौरि, शनैश्चर, मन्द — प्रातः पढ़ने से शनि की पीड़ा कभी नहीं होती।


स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

## इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।